दिल्ली में नई तितलियां

इस मौसम में सबसे अधिक तितलियां दिखती हैं। बागों में जाओगे तो तुम्हें भी आसानी से ये दिख जाएंगी। रंग-बिरंगी, खूब सारे डिजाइन वाली, कभी इस फूल तो कभी उस फूल बैठती तितली को पकड़ लेने का मन करता है। अगर तुम्हें भी तितली पसंद है तो तुम्हें उसके बारे में और जानने की कोशिश करनी चाहिए। दिल्ली में कई तरह की तितलियां मिलती हैं और हाल में तो कई नई प्रजातियों की पहचान भी हुई है। आज इन्हीं के बारे में जानते हैं।

जानकार कहते हैं कि बरसात का मौसम बीत जाने के बाद तितलियां अधिक दिखाई देने लगती हैं। राजधानी में भी यह मौसम इन्हीं का है। इस समय न केवल इनकी संख्या बढ़ जाती है, बल्कि वैरायटी भी काफी दिखती है, यानी अलग-अलग तरह और रंगों की तितलियों को तुम इस समय देख सकते हो। वाइल्डलाइफ साइंटिस्ट डॉक्टर फैयाज ए खुदसार कहते हैं, 'पिछले कुछ सालों में दिल्ली में तितलियों की संख्या में तेजी से इजाफा हुआ है। पिछले साल तो यमुना बायोडायवर्सिटी पार्क और अरावली बायोडायवर्सिटी पार्क में हमें संरक्षित की जा रही तितलियां भी दिखी थीं। अरावली में करीब 95 प्रतिशत और यमुना में 70 प्रजातियां देखी गई थीं।' दिल्ली की हरियाली, बायोडायवर्सिटी पार्क और अन्य पार्कों के कारण ही यहां काफी संख्या में तितलियां आती हैं। प्लेन टाइगर और येलो ऑरेंज तितलियां तो अक्सर ही दिख जाती हैं, लेकिन हाल ही में तितलियों की कई नई प्रजातियां भी पाई गई हैं यहां।

खुशबू देती हैं और खूब घुमक्कड़ होती हैं नन्ही तितलियां..

संसार में सैकड़ों तरह की तितलियां हैं। विभिन्न देशों की तितलियों के रंग-रूप में काफी अंतर होता है। ब्राजील में सबसे अधिक तितलियां पायी जाती हैं। अधिक ठंडे स्थानों पर तितलियां नहीं होतीं। आइसलैंड में एक भी किस्म की तितली नहीं पायी जाती, लेकिन अन्य स्थानों से कुछ तितलियां गर्मी के दिनों में वहां पहुंच जाती हैं। तितलियां घुमक्कड़ होती हैं। कई तितलियां तो एक बार में 800 से 900 मील तक का चक्कर लगाती पायी गयी हैं। कनाडा से मैक्सिको और अलास्का से कैलीफोर्निया जाने में उन्हें केवल दो महीने का समय लगता है।

एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

आमतौर पर तितलियां दिन में उड़ती हैं। कुछ तितलियां ऐसी भी हैं, जो दिन में भी उड़ा करती हैं और रात में भी। यूं तो तितलियों की सैकड़ों किस्में हैं, लेकिन इन सैकड़ों किस्मों में से कुछ अपने विशेष गुणों के कारण प्रसिद्ध हैं। हाल ही में पता चला है कि कुछ तितलियों के शरीर से खुशबू निकलती है। 'डैलियास इंडिका' नामक तितली की खुशबू किसी परफ्यूम से कम नहीं होती। हमारे देश में 'पियरिस कैनिडिया' नामक तितली बहुतायत में पायी जाती है। उसके पंखों से भी खास खुशबू निकलती है।

'फिटिलरीन' तितलियां बहुत छोटी होती हैं। इनके पंखों का घेरा आधा इंच से अधिक नहीं होता। इस किस्म की तितलियों के शरीर से चंदन जैसी खुशबू आती है। नारंगी व काले रंग की मोनार्क तितलियों के शरीर से चंदन जैसी तेज और सुहानी खुशबू आती है।

इस मौसम में पेड़ों पर लटक जाती हैं ये...

अमेरिका व कनाडा में जब फूल खिलते हैं, तब मोनार्क तितलियां मदमस्त होकर इधर-उधर मंडराती देखी जा सकती हैं। जैसे ही सितम्बर का महीना आता है, मोनार्क तितलियों के झुंड के झुंड पेड़ों पर लटकने लगते हैं। एक-एक पेड़ पर लाखों तितलियां न जाने कहां से आकर लटक जाती हैं। उनके सम्मिलित भार से पेड़ों के पत्ते तथा डालियां तक झुक जाती हैं। सितम्बर के अंत में तितलियों का काफिला दक्षिण की ओर उड़ जाता है और पूरे महाद्वीप का चक्कर लगाता है।

पूर्वी कनाडा से दक्षिण मैक्सिको के बीच 2,000 मील का फासला तितलियां तय करती हैं। इनके झुंड जमीन से 20 फुट ऊपर 10-11 मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ते हैं। रास्ते में विशाल झीलें, घाटियां, पर्वतमालाएं और झुलसा देने वाले रेगिस्तानी क्षेत्र पड़ते हैं। रास्ते में पड़ने वाली सारी बाधाओं को पार करती हुई ये नाजुक और नन्ही मोनार्क तितलियां खाड़ी के क्षेत्र में पहुंच जाती हैं और कैलिफोर्निया में पेसिफिक ग्रोव से दक्षिण और लॉस एंजिल्स तक उनके विशाल झुंड दिखायी देने लगते हैं।

पेसिफिक ग्रोव में अक्तूबर के अंत तक मोनार्क तितलियां पहुंचती हैं। सर्दी के पूरे मौसम में 6 एकड़ के क्षेत्र में पेड़ों पर असंख्य तितलियां ऐसे लटक जाती हैं, जैसे उन्हें फेविकोल से चिपका दिया गया हो। जब मौसम गर्म होता है तो वे अपनी शीतनिद्रा से जागकर आसपास के बागों में उड़कर पराग ग्रहण करती हैं और फिर उन्हीं पेड़ों पर आकर लटक जाती हैं। इन तितलियों का जीवन बहुत थोड़ा होता है। इनकी इतनी उम्र भी नहीं होती कि वे दो बार चक्कर लगा सकें।

कैंपस इंटरव्यू में सफलता के लिए टिप्स

कैंपस इंटरव्यू नौकारी पाने की फास्ट स्टेज होती है, लेकिन यह आखिरी सीढी भी नहीं है। कैंपस इंटरव्यू का मंत्र है कॉन्फिडेंस, कम्युनिकेशन स्किल्स और पॉजिटिविटी। इसके अलावा ट्रिक्स हैं, जिन्हें अपनाकर आप इसमें सफलता आसानी से पा सकते हैं।

सबसे पहले अच्छे से जानकारी होना कोई भी पूरी तरह परफेक्ट नहीं है। कुछ न कुछ कमियां सभी में होती हैं। हमें जिस फील्ड में जाना है, उसकी कंप्लीट नॉलेज हो। उससे जुडे स्पेशलाइज्ड एरिया के बारे में भी इनफॉर्मेशन होनी चाहिए। कैंपस इंटरव्यू में इससे रिलेटेड क्वैश्न जरूर पूछे जाएंगे। इंटरव्यू में आपके वीक प्वाइंट्स भी पूछे जा सकते हैं। किसी तरह का संकोच न करें, जो भी हो, खुलकर बता दें। कई बार जिन आंसर्स को हम निगेटिव समझते हैं, वही जॉब दिलाने में पॉजिटिव रोल अदा कर देते हैं। आत्माविश्वास को होना कैंपस इंटरव्यू कॉन्फिडेंस पर डिपेंड करता है। सब्जेक्ट से रिलेटेड चैश्वंस से सामना तो होगा ही, साथ ही यह भी देखा जाएगा कि किस सेक्शन में आप कन्फ्यूज हैं। किसी चैश्चन का आंसर देते वक्त कॉन्फिडेंस लूज होता है, तो इंटरव्यूवर समझ जाएगा कि यही आपका वीक प्वाइंट है। जो आंसर न आता हो, उसके लिए माफी मांग लें।

इंटरव्यू में केवल नॉलेज ही जज नहीं की जाएगी। कैंपस इंटरव्यू में इंटरव्यूवर का मेन फोकस आपके बिहैवियर पर रहेगा। बिहैवियर बेटर करने के लिए खुद ही अपने ब्रेन को एनॉलाइज करें। कहीं आप बहुत एग्रेसिव तो नहीं होते हैं! कम्युनिकेशन के वक्त आंखें शब्दों का साथ देती हैं कि नहीं। जिन शब्दों को यूज करते हैं, वे सोसायटी को स्वीकार हैं भी हैं या नहीं!

कैंपस सलेक्शन में कैंडिडेट की नॉलेज को अधिक इंपॉर्टेंस नहीं दी जाती है। ज्यादातर स्टूडेंट्स का यह पहला या दूसरा चांस ही होता है। वे अन-एक्सपीरियंस्ड होते हैं। यह बात रिक्रूट करने वाली कंपनियां भी जानती हैं। सलेक्शन में स्टूडेंट्स के कॉन्फिडेंस, एटिकेट्स और पॉजिटिव अप्रोच पर मार्क्स दिए जाते हैं। कॉन्फिडेंस नहीं है, तो वे भला कैसे आगे बढेंगे।

सफलता के लिए प्रोफेशनल होना जरूरी

आप नौकरी में हों या फिर ढूंढ रहे हैं। सफलता चाहिए, तो प्रोफेशनल अप्रोच अपनानी होगी। बिना इसके आप प्रोफेशन में बेस्ट नहीं कर सकते। प्रोफेशनल अप्रोच के लिए प्रोफेशनल एटिकेट्स की नॉलेज जरूरी है।

अपनी बात को सही शब्दों में कहें दूसरों की बातों को ध्यान से सुनें। एक अच्छा लिसनर हमेशा सही डिसीजन पर पहुंचता है। इसके लिए जरूरी है पेशेंस। तभी आप सामने वाले की बातों को समझ पाएंगे। हमेशा धीरे बोलें, लेकिन क्लियर। नम्रता झलकनी चाहिए। जो भी कहें, कम शब्दों में, मगर मीनिंगफुल कहें।

अच्छा प्रोफेशनल कम्युनिकेशन के समय अपना आई कॉन्टैक्ट सामने वाले से बनाए रखता है। आई कॉन्टैक्ट टूटने का मतलब है कॉन्फिडेंस में कमी। साथ ही, यह भी मैसेज जाता है कि आप उसे इंपॉर्टेंस नहीं दे रहे हैं। जब भी बात करें, बॉडी मूवमेंट कंट्रोल होना चाहिए।

एक प्रोफेशनल को हमेशा साफ-सुथरी और प्रोफेशन से मैच करती ड्रेस पहननी चाहिए। गर्ल्स एक्सपोजिंग ड्रेस पहनने से बचें। शूज हमेशा पॉलिश्ड हों और वे चलते समय आवाज भी कम ही करें। हेयर स्टाइल ऐसा सलेक्ट करें, जो आपकी पर्सनैलिटी से मैच करता हो।

प्रोफेशनल एटिकेट लर्न करने के लिए उस फील्ड से रिलेटेड किसी सक्सेसफुल पर्सनैलिटी को सर्च करें। सोचें कि लोग उसकी बात सुनते हैं, मेरी क्यों नहीं। उसकी एटिकेट्स पर गौर करें। उन्हें अपनी लाइफ का हिस्सा बनाएं। सीखने का इससे बढिया मेथड दूसरा कोई और नहीं हो सकता।